Jahannam Kya Hai ? (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 351
Weekly Booklet : 351

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दावत" की एक क़िस्त बनाम

जहन्नम क्या है ?

सफ़हात 23

दुन्या की महब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है 02
घर वालों को अ़ज़ाब से किस तरह बचाएं ? 07
जहन्नम की लरज़ा खेज़ कहानी जिब्राईल की ज़बानी 09
पेन्सिल की चोरी से फांसी के फन्दे तक 19

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **जहन्नम क्या है ?**

सिने त़बाअ़त : शव्वालुल मुकर्रम **1445** हि., मई **2024** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**जहन्नम क्या है ?**"

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए Whatsapp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" के सफ़ह़ा 566 ता 584 से लिया गया है।

जहन्नम क्या है ?

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 23 सफ़ह़ात का रिसाला : **"जहन्नम क्या है ?"** पढ़ या सुन ले उसे जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा और उस को मां बाप समेत जन्नतुल फ़िरदोस में बे ह़िसाब दाख़िला अ़त़ा फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** पाक के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** पाक के अ़र्श के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : ﴿1﴾ वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे ﴿2﴾ मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला ﴿3﴾ मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला। (البدور السافرۃ، ص131، حدیث:366)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

क्या फ़ैशन परस्त ही मुअ़ज़्ज़ज़ है ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मक़ामे ग़ौर है ! क्या आज दुन्या को "बहुत बड़ी चीज़" नहीं समझा जा रहा ? क्या आज कल के मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत के दिलों से इस्लाम की ह़क़ीक़ी हैबत निकलती नहीं जा रही ? क्या नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना तर्क नहीं

कर दिया गया ? क्या आपस में गाली गलोच का सिल्सिला ज़ोरों पर नहीं ? सद करोड़ अफ़्सोस ! आज भारी अक्सरिय्यत की ज़िन्दगी का अन्दाज़ येही बता रहा है कि दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ दी जा रही है, शरीअ़त व सुन्नत से مَعَاذَاللہ लोग दूर होते चले जा रहे हैं, सुन्नतों से येह दूरी और फ़िरंगी फ़ैशन का जुनून आख़िर इस मुआ़शरे को कहां ले जाएगा !

दुन्या की मह़ब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! होश में आइये और मरने से पहले संभल जाइये ! यक़ीन मानिये ! येह सारी तबाही दुन्या की मह़ब्बत ही ने मचाई है, हुब्बे दुन्या के सबब आज लोग सुन्नतों से दूर जा पड़े हैं, सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : حُبُّ الدُّنْیَا رَاْسُ کُلِّ خَطِیْئَۃٍ या'नी दुन्या की मह़ब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है। (موسوعۃ امام ابن ابی الدنیا، 5/22، حدیث:9) सद करोड़ अफ़्सोस ! जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों के ह़ुसूल के लिये मा'मूली सी घरेलू आसाइशें छोड़ कर फ़क़त़ चन्द दिन के लिये भी सुन्नतें सीखने सिखाने की ख़ात़िर राहे ख़ुदा में सफ़र के लिये आज हम तय्यार नहीं होते जब कि फ़ानी दुन्या की आ़रिज़ी दौलत कमाने के लिये अपने घर वालों से बरसहा बरस के लिये हज़ारों मील दूर जाने के लिये फ़ौरन तय्यार हो जाते हैं। क्या मुसल्मानों की दीनी ए'तिबार से बरबादी और ग़ैरों का इन पर ह़ावी होना, मस्जिदों की वीरानी, सिनेमा घरों और ऐ़शो नशात़ के अड्डों की आबादी, फ़िरंगी तहज़ीब की यलग़ार, मग़रिबी फ़ैशन की भरमार, फ़िल्में ड्रामे देखने कि लिये घर घर टी वी, केबल सिस्टम, इन्टरनेट और वी सी आर, हर त़रफ़ गुनाहों का गर्म बाज़ार और मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत का बिगड़ा हुवा किरदार, येह सब कुछ हमें पुकार

पुकार कर दा'वते फ़िक्र नहीं दे रहा कि "हमें अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों का ज़रूर बिज़्ज़रूर मुसाफ़िर बनना चाहिये।" आज हमें ज़िन्दगी में यक मुश्त 12 माह हर 12 माह में एक माह और उ़म्र भर हर माह 3 दिन के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करना बेह़द मुश्किल महसूस होता है। सोचिये तो सही ! अगर हम में से हर एक अपनी मजबूरियों में फंस कर रह गया तो आख़िर कौन इन मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करेगा ? कौन सारी दुन्या के लोगों तक नेकी की दा'वत पहुंचाएगा ? ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही कौन करेगा ? कौन अग़यार की वज़्अ़ क़त़्अ़ पर इतराने वाले नादान मुसल्मानों को सुन्नतों के सांचे में ढलने का ज़ेह्न देगा ? कौन इन्हें येह मदनी मक़्सद अपनाने की तरग़ीब देगा कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه। ऐ काश ! हर इस्लामी भाई येह निय्यत कर ले कि ज़िन्दगी में यक मुश्त 12 माह और हर 12 माह में एक माह और उ़म्र भर हर माह 3 दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार करूंगा, اِنْ شَآءَاللّٰه। मदनी क़ाफ़िले की बरकतों को समझने के लिये एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे

बद तरीन, अ़ज़ीज़ तरीन कैसे बना ?

एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है : वोह बेह़द बिगड़े हुवे इन्सान थे, फ़िल्मों ड्रामों का रसिया होने के साथ साथ औबाश लड़कों से दोस्तियां और रात गए तक उन के साथ आवारा गर्दियां करना उन के

मा'मूलात में शामिल था। उन बुरी ह़रकतों की वज्ह से न सिर्फ़ ख़ानदान भर के लोग बल्कि उन के अपने वालिदैन भी उन से कतराते, घर में उन की आमद से घबराते और यहां तक कि दूसरों को भी उन की सोह़बत की नुहूसत से बचने की तल्क़ीन फ़रमाते। मुआ़मला इस ह़द तक बढ़ चुका था कि वालिद साह़िब उन्हें घर से निकाल देने पर तय्यार हो चुके थे। उन की गुनाहों भरी ख़ज़ां रसीदा शाम के सुब्ह़े बहारां बनने की सबील कुछ इस त़रह़ हुई कि एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने निहायत ही शफ़्क़त के साथ इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले दो दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत पेश की। उन्हों ने मुआ़मला वालिद साह़िब की इजाज़त पर छोड़ दिया। नेकी की दा'वत के जज़्बे से सरशार आ़शिक़े रसूल इस्लामी भाई उन के इस फ़ैसले को सुन कर ख़ुशी से झूम उठे क्यूं कि वालिद साह़िब पहले ही दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से बहुत मह़ब्बत करते थे। मौक़अ़ पाते ही उन मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने वालिद साह़िब पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन के इज्तिमाअ़ में शिर्कत की इजाज़त चाही। वालिद साह़िब ने उन की इस्लाह़ का ज़रीआ़ समझते हुए मअ़ अख़्राजात इज्तिमाअ़ में जाने की ब ख़ुशी इजाज़त बख़्श दी। मुक़र्ररा तारीख़ पर आ़शिक़ाने रसूल की मइ़य्यत में इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत नसीब हुई। इज्तिमाअ़ में होने वाले सुन्नतों भरे बयानात, ज़िक्रुल्लाह और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने उन के दिल में हलचल मचा कर रख दी। मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत मिलने पर वोह हाथों हाथ आ़शिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। اَلْحَمْدُلِلّٰه मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल की

सोह़बतों और शफ़्क़तों ने उन के दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा और सुन्नतों भरे मदनी लिबास का जज़्बा मिला, वालिदैन की ह़क़ तलफ़ियों की मुआ़फ़ी मांगने का ज़ेह्न बना, चेहरे पर सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या'नी दाढ़ी शरीफ़ और सर पर इ़मामा शरीफ़ का ताज सजाने की निय्यत बनी। मदनी क़ाफ़िले से वापसी पर घर में दाख़िल होते ही वालिद साह़िब के क़दमों में गिर गए और उन से रो रो कर मुआ़फ़ी त़लब की। इस त़रह़ वोह सुन्नतों के मदनी फूल लुटाने में मश्ग़ूल हुए। कल तक जो अ़ज़ीज़ो अक़ारिब उन्हें देख कर कतराते थे اَلْحَمْدُ لِلّٰه अब वोह गले लगाते हैं। कल तक वोह ख़ानदान के अन्दर "बद तरीन" थे اَلْحَمْدُ لِلّٰه दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल की बरकत से आज उन के नज़्दीक "अ़ज़ीज़ तरीन" बन गए हैं।

जब तक बिके न थे कोई पूछता न था तुम ने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

घर वालों को नेकी की दा'वत की ताकीद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! आ़शिक़े रसूल की इन्फ़िरादी कोशिश रंग लाई और मुआ़शरे का एक नासूर नुमा "बद तरीन" इन्सान सब की आंखों का तारा और "अ़ज़ीज़ तरीन" मुसल्मान बन गया। हम सभी अगर हर मिलने जुलने वाले को नमाज़ की तल्क़ीन करते, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत देते और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की रग़बत दिलाते रहें तो देखते ही देखते मुआ़शरे में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाए ! बिल ख़ुसूस अपने घर वालों को भी नेकी की दा'वत देनी और उन्हें गुनाहों से बचाना चाहिये। चुनान्चे ह़ज़रते ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत

है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई : ﴿قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا﴾ (پ28، التحریم:6) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम अपने घर वालों को किस त़रह़ आग से बचाएं ? हुज़ूरे पुरनूर, صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : उन को उन कामों के करने का हुक्म दो जो **अल्लाह** पाक को मह़बूब (या'नी प्यारे) हैं और उन कामों से मन्अ़ करो जो **अल्लाह** पाक को ना पसन्द हैं।

(تفسیر درّ منثور، 8/225)

ख़ौफ़े ख़ुदा का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़दीसे पाक में हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पारह 28 सूरतुत्तह़रीम की आयत नम्बर 6 का जो ह़िस्सा तिलावत फ़रमाया है उस की तफ़्सीर से क़ब्ल एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1012 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल" जिल्द 2 सफ़ह़ा 881 पर है : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि जब **अल्लाह** पाक ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ﴾ (پ28، التحریم:6) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं। तो शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सामने तिलावत फ़रमाया तो एक नौ जवान ग़श खा कर गिर गया। आप

صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के दिल पर अपना दस्ते मुबारक रखा तो वोह ह़रकत कर रहा था। आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ नौ जवान ! لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ कहो।" उस ने कहा तो आप صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे जन्नत की बिशारत (या'नी खुश ख़बरी) दी, सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हमारे दरमियान में से ? (या'नी हम में से किसी और की येह ह़ालत हो जाए तो ?) आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने **अल्लाह** पाक का येह फ़रमान नहीं सुना : ﴿ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَ خَافَ وَعِیْدِ ۝۱۴﴾ (پ13،ابراہیم:14) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** येह उस के लिये है जो मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे। (مستدرک،3/93،حدیث:3390۔الزّواجر،2/471)

अ़ज़ाब से किस त़रह़ बचाएं ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا﴾ के तह़्त फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** पाक और उस के **रसूल** صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के, इ़बादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानअ़त कर के और उन्हें इ़ल्मो अदब सिखा कर।" (ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ)

अहले ख़ाना को नेकी की बातें बताओ

ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ عَنْہ बयान कर्दा आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़ुद भी भलाई की बातें सीखो और अपने अहले ख़ाना को भी नेकी की बातें और अदब सिखाओ। (جمع الجوامع للسیوطی،13/244،حدیث:6776)

बालिग़ औलाद की इस्लाह़ के मुतअ़ल्लिक़ आ'ला ह़ज़रत का फ़तवा

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 370 से एक मा'लूमाती फ़तवा आसान कर के पेश करने की सई की है : मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : सुवाल : बालिग़ औलाद को नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना वालिदैन पर फ़र्ज़ है या वाजिब ? अल जवाब : जिस फ़े'ल (काम) की जो शर्ई हैसिय्यत है वालिदैन के लिये इस्लाह़ के तअ़ल्लुक़ से शरअ़न वैसा ही हुक्म है या'नी फ़र्ज़ पर फ़र्ज़, वाजिब पर वाजिब, सुन्नत पर सुन्नत, मुस्तह़ब पर मुस्तह़ब मगर ब शर्ते कुदरत ब क़दरे कुदरत ब उम्मीदे मन्फ़अ़त (या'नी जितनी कुदरत हो उसी के मुत़ाबिक़ इस्लाह़ की बात कहें जब कि नफ़अ़ की उम्मीद हो) वरना (हुक्मे कुरआनी वाज़ेह़ है कि) : ﴿عَلَیْكُمْ اَنْفُسَكُمْۚ لَا یَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَیْتُمْؕ﴾ (پ7، المائدہ:105) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो। (फ़तावा रज़विय्या, 24/370)

जहन्नम का तआ़रुफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें अपनी और घर वालों की इस्लाह़ पर ख़ुसूसी तवज्जोह देते हुए ख़ुद को और उन को जहन्नम की अंधेरी और ख़ौफ़नाक काली आग से बचाने की पैहम कोशिश जारी रखनी चाहिये। ख़ुदा की क़सम ! जहन्नम की आग बेह़द शदीद है, इसे किसी सूरत से भी कोई बरदाश्त नहीं कर सकेगा। फ़र्ज़ नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज में कोताही करने वालों, मां बाप को सताने वालों, अपनी औलाद की शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबियत न करने वालों, अपने बेटों को

दाढ़ी रखने से रोकने वालों और ख़ुद भी दाढ़ी मुंडाने वालों, दाढ़ी को एक मुठ्ठी से घटाने वालों, मिलावट वाला माल धोके से गाहक को पकड़ाने वालों, डन्डी मार कर सौदा चलाने वालों, चोरों, डाकूओं, जेब कतरों, टीवी, (T.V.), और इन्टरनेट (INTERNET) पर फ़िल्में ड्रामे देखने वालों, गाने बाजे सुनने वालों, अपने घर वालों को इस की सहूलत फ़राहम करने वालों, अपने घरों पर फ़िल्में देखने के लिये डिश एन्टिना (DISH ANTENNA) लगाने वालों, लोगों को फ़िल्मों की लीड (LEAD) या केबल (CABLE) देने वालों ! और त़रह़ त़रह़ से गुनाहों का बाज़ार गर्म करने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है। यक़ीन मानिये ! जहन्नम के अंधेरे में डूबी हुई काली काली आग सही नहीं जा सकेगी, तिरमिज़ी शरीफ़ में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : दोज़ख़ की आग हज़ार साल जलाई गई यहां तक कि सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार साल भड़काई गई यहां तक कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार साल दहकाई गई यहां तक कि सियाह (या'नी काली) हो गई पस (अब) वोह निहायत ही सियाह है। (ترمذی، 4/266، حدیث:2600)

जहन्नम की लरज़ा ख़ेज़ कहानी जिब्रईल की ज़बानी

ख़ुदा की क़सम ! जहन्नम का अ़ज़ाब किसी से भी न सहा जाएगा। ह़ज़रते इमाम ह़ाफ़िज़ अबुल क़ासिम सुलैमान त़बरानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ नक़्ल करते हैं : एक बार मदीने के ताजदार, صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार में ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नबिय्ये बरह़क़ बना कर भेजा है, अगर जहन्नम को सूई के नाके के बराबर

खोल दिया जाए तो तमाम ज़मीन वाले उस की गर्मी से हलाक हो जाएं, अगर अहले जहन्नम का एक कपड़ा ज़मीन व आस्मान के दरमियान लटका दिया जाए तो तमाम अहले ज़मीन मौत के घाट उतर जाएं। आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ सब्ऊ़स फ़रमाया अगर जहन्नम पर मुक़र्रर फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता दुन्या वालों के सामने ज़ाहिर हो जाए तो उस की हैबत से तमाम अहले ज़मीन मर जाएं। सरकार ! صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस ज़ाते वाला की क़सम ! जिस ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रसूले बरहक़ बना कर भेजा है जहन्नम की ज़न्जीरों का एक हल्क़ा जिस का ज़िक्र क़ुरआने करीम में फ़रमाया गया है अगर उसे दुन्या के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो वोह रेज़ा रेज़ा हो जाएं और तह़्तस्सरा (या'नी सातवीं ज़मीन के नीचे) जा पहुंचें। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! बस करो इतना ही तज़्किरा काफ़ी है, कहीं ऐसा न हो कि मेरा दिल फट जाए और मैं वफ़ात पा जाऊं। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) को मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि रो रहे हैं, फ़रमाया : ऐ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! तुम क्यूं रो रहे हो ? बारगाहे ख़ुदा वन्दी में आप को तो एक ख़ास मक़ाम ह़ासिल है। अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं क्यूं न रोऊं, कहीं ऐसा न हो कि इल्मे इलाही में मौजूदा ह़ाल के बजाए मेरा कोई और ह़ाल हो, कहीं इब्लीस की त़रह़ मुझे भी इम्तिह़ान में न डाल दिया जाए। कहीं हारूत व मारूत की त़रह़ मुझे भी आज़्माइश में मुब्तला न कर दिया जाए।

रावी बताते हैं, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी रोने लगे, ह़ज़रते जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) भी रो रहे थे। दोनों ह़ज़रात रोते रहे, आख़िरे कार

आवाज़ आई : "ऐ जिब्रईल ! (عَلَيْهِ السَّلَام) ऐ मुहम्मद ! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** पाक ने आप दोनों को अपनी ना फ़रमानी से महफ़ूज़ कर लिया है।" जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) आस्मानों की त़रफ़ परवाज़ कर गए। मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए। बा'ज़ अन्सार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के क़रीब से गुज़रे जो हंस और खेल रहे थे। फ़रमाया : "तुम हंस रहे हो और तुम्हारे पीछे जहन्नम है, अगर तुम वोह बातें जानते जो मैं जानता हूं तो तुम थोड़ा हंसते और ज़ियादा रोते और तुम खाना पीना छोड़ देते और पहाड़ों की त़रफ़ निकल जाते और ख़ूब मशक़्क़तें बरदाश्त कर के इबादते इलाही बजा लाते।" आवाज़ आई : ऐ मुहम्मद ! صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे बन्दों को मायूस मत कीजिये, मैं ने आप को ख़ुश ख़बरी देने वाला बना कर भेजा है और तंगी करने वाला बना कर नहीं भेजा। पस **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : राहे रास्त पर गामज़न रहो (या'नी सीधे रास्ते पर चलो) और मियाना रवी इख़्तियार करो। (معجم اوسط، 2/78، حدیث:2583)

अफ़्सोस ! हमारा दिल नहीं लरज़ता !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मा'सूम बल्कि सय्यिदुल मा'सूमीन हो कर भी और जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) भी मा'सूम और मा'सूम फ़िरिश्तों के आक़ा होने के बा वुजूद अ़ज़ाबे जहन्नम का तज़्किरा छिड़ने पर ख़ौफ़े रब्बे बारी से गिर्या व ज़ारी फ़रमाएं। और एक हम हैं कि गुनाह पर गुनाह किये जाएं मगर जहन्नम का हौलनाक तज़्किरा सुन कर न दिल लरज़े और न हमारा कलेजा कांपे और न ही पल्कें भीगें। अफ़्सोस ! अ़ज़ाबे जहन्नम की ख़ौफ़नाक

बातें सुन कर भी न हमें पशेमानी है न परेशानी, ख़जालत है न नदामत।

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता हमें रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

(वसाइले बख़्शिश, स. 238)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

रात की तन्हाई में आयात सुन कर वफ़ात

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की हालत येह होती कि जहन्नम का तज़्किरा सुन कर या जहन्नम के अ़ज़ाबात के बयान पर मुश्तमिल क़ुरआनी आयात सुन कर बेहोश हो जाते बल्कि बा'ज़ों की तो रूहें परवाज़ कर जातीं चुनान्चे ह़ज़रते मन्सूर बिन इ़मामा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं सफ़रे **ह़ज** के दौरान कूफ़े की एक गली में ठहरा हुवा था। अंधेरी रात में किसी ज़रूरत से निकला, एक घर से रिक़्क़त अंगेज़ मुनाजात की कुछ इस त़रह़ आवाज़ सुनी : ऐ मेरे परवर दगार तेरी इ़ज़्ज़त और तेरे जलाल की क़सम ! मैं ने अपनी मा'सिय्यत में तेरी मुख़ालफ़त का इरादा नहीं किया था, हां इतना ज़रूर है कि गुनाह करते वक़्त तुझ से ना वाक़िफ़ भी न था, बस मुझ से गुनाह सरज़द हो गया और मुझ पर तेरी ढील देने वाली पर्दापोशी ने मुझे गुनाह पर दिलेर कर दिया और मेरी बद बख़्ती ने गुनाह पर मेरी मदद की और मैं अपनी नादानी के सबब ना फ़रमानी में मुब्तला हो गया। अब मैं तेरे फ़ज़्ल से उम्मीद रखता हूं कि तू मेरा उ़ज़्र क़बूल फ़रमाएगा। अब अगर तूने मेरी मा'ज़िरत क़बूल न की और मुझ पर रह़्म न फ़रमाया तो हाए अ़ज़ाब में मेरे ग़म की दराज़ी ! जब वोह ख़ामोश हुवा तो मैं ने पारह 28 **सूरतुत्तह़रीम** की छटी आयते करीमा पढ़ी :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं। उस पर सख़्त कर्रे फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं, जो **अल्लाह** का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं।

आयते मुबारका पढ़ने के बा'द मैं ने एक शदीद चीख़ने और धड़ाम से गिरने की आवाज़ सुनी और उस के बा'द ख़ामोशी त़ारी हो गई और किसी क़िस्म के हिल जुल की आवाज़ महसूस न हुई। फिर मैं अपना काम निमटा कर अपनी क़ियाम गाह पर वापस आ गया। जब मैं सुब्ह़ उस त़रफ़ गया तो लोग ता'ज़िय्यत के लिये जम्अ़ थे और रोने की आवाज़ें आ रही थीं, दरीं अस्ना एक ज़ईफ़ बुढ़िया देखी जो रो रो कर कह रही थी **अल्लाह** पाक मेरे बेटे के क़ातिल को जज़ाए ख़ैर न दे कि उस ने मेरे बेटे पर अ़ज़ाबे इलाही के बयान पर मुश्तमिल आयते करीमा तिलावत की, जिस की ताब न ला कर वोह ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब गिरा और फ़ौत हो गया। ह़ज़रते मन्सूर बिन इ़मामा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कहते हैं : उस रात मैं ने ख़्वाब में एक शख़्स को देखा जो मुझ से कह रहा था : "मैं वोही हूं जिस ने आप की ज़बानी सूरतुत्तह़रीम की छटी आयते करीमा की तिलावत सुन कर ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब दम तोड़ा है।" मैं ने पूछा : مَافَعَلَ اللهُ بِكَ؟ **अल्लाह** पाक ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया : **अल्लाह** पाक ने मेरे साथ वोह किया है जो शुहदाए बद्र के साथ किया। मैं ने पूछा येह कैसे ? उस

ने कहा : इस लिये कि **अल्लाह** पाक ने उन को काफ़िरों की तलवार से शहीद किया और मुझे अपने इश्क़ की तलवार से। (مواعظ حسنہ، ص42،43بتغیر)

ख़ुदाया तेरे ख़ौफ़ का हूं मैं साइल सदा दिल रहे तेरी उल्फ़त में घाइल
गुनाहों से हर आन डरता रहूं मैं फ़क़त नेक ही काम करता रहूं मैं
तू कर दर गुज़र मुझ को हर मा'सिय्यत से नवाज़ ऐ ख़ुदाए करीम मग़्फ़िरत से

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

घर वालों को भी नेकी की दा'वत दीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ख़ाइफ़ीन (या'नी **अल्लाह** पाक से डरने वालों) की भी क्या शान होती है ! जिस आयते करीमा को सुन कर ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले बन्दे ने दम तोड़ा था, उस में अपने साथ साथ अपने घर वालों को भी जहन्नम की आग से बचाने का हुक्म दिया गया है। हर एक को चाहिये कि ख़ुद भी नेकियां करे, गुनाहों से बचे और अहले ख़ाना की भी इस्लाह़ का सामान करता रहे। ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ुरतुबी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने ह़ज़रते इल्किया رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ का क़ौल नक़्ल फ़रमाया : हम पर फ़र्ज़ है कि अपनी औलाद और अपने अहले ख़ाना को दीन की ता'लीम दें, अच्छी बातें सिखाएं और उस अदब व हुनर की ता'लीम दें जिस के बिग़ैर चारा नहीं। (تفسیر قرطبی، 9/148)

बच्चे को सब से पहले दीन सिखाइये

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सब से मुक़द्दम येह है कि बच्चों को क़ुरआने मजीद पढ़ाएं और दीन की ज़रूरी बातें सिखाई जाएं, रोज़ा व नमाज़ व त़हारत

और बैअ् व इजारा (या'नी ख़रीद व फ़रोख़्त और उजरत वग़ैरा के लेन देन) व दीगर मुआ़मलात के मसाइल जिन की रोज़ मर्रा ह़ाजत पड़ती है और ना वाक़िफ़ी से ख़िलाफ़े शर्अ़ अ़मल करने के जुर्म में मुब्तला होते हैं उन की ता'लीम हो। अगर देखें कि बच्चे को इ़ल्म की त़रफ़ रुज्ह़ान (या'नी मैलान) है और समझदार है तो इ़ल्मे दीन की ख़िदमत से बढ़ कर क्या काम है और अगर इस्तित़ाअ़त न हो तो तस्ह़ीह़ व ता'लीमे अ़क़ाइद और ज़रूरी मसाइल की ता'लीम के बा'द जिस जाइज़ काम में लगाएं इख़्तियार है। (बहारे शरीअ़त, 2/256, ह़िस्सा : 8) लड़की को भी अ़क़ाइद व ज़रूरी मसाइल सिखाने के बा'द किसी औ़रत से सिलाई और नक़्शो निगार वग़ैरा ऐसे काम सिखाएं जिन की औ़रतों को अक्सर ज़रूरत पड़ती है और खाना पकाने और दीगर उमूरे ख़ानादारी में उस को सलीक़े होने की कोशिश करें कि सलीक़े वाली औ़रत जिस ख़ूबी से ज़िन्दगी बसर कर सकती है बद सलीक़ा नहीं कर सकती। (बहारे शरीअ़त, 2/257, ह़िस्सा : 8, 279/5، ردالمحتار)

औलाद को सख़ावत व एह़सान की ता'लीम देना वाजिब है

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त जिल्द 3" सफ़ह़ा 68 पर है : इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मोमिन पर अपनी औलाद को जूद (या'नी सख़ावत) व एह़सान की ता'लीम वैसी ही वाजिब है जिस त़रह़ तौह़ीद व ईमान की ता'लीम वाजिब है क्यूं कि जूद व एह़सान से दुन्या की मह़ब्बत दूर होती है और मह़ब्बते दुन्या ही हर गुनाह की जड़ है। (568/8، دُرِّمختار)

बे औलाद को जब औलाद मिली !

कहा जाता है : एक मालदार शख़्स के यहां औलाद न थी, उस ने

उस के लिये बड़े जतन किये मगर काम्याबी न मिली, किसी ने मश्वरा दिया कि मक्कए मुकर्रमा हाज़िर हों और मस्जिदुल हराम शरीफ़ के अन्दर मक़ामे इब्राहीम के पास दुआ मांगिये اِنْ شَآءَاللّٰه आप का काम हो जाएगा। उस ने ऐसा ही किया और **अल्लाह** पाक ने उसे चांद सा बेटा दिया। उस ने बड़े चाव चोचले से उस की परवरिश की, इक्लौते बच्चे को ज़रूरत से ज़ियादा प्यार मिला और दुरुस्त तरबियत न की गई, जिस के सबब वोह आवारा और उड़ाऊ ख़र्च हो गया। बाप को बहुत देर में होश आया, उस ने अपने बिगड़े हुए बेटे को पैसे देने बन्द कर दिये, इस से वोह अपने बाप का मुख़ालिफ़ हो गया और जहां उस के बाप ने औलाद के लिये दुआ मांगी थी जिस का येह समर (या'नी नतीजा) था वहीं या'नी मक्कए मुकर्रमा हाज़िर हो कर मक़ामे इब्राहीम के पास येह ना लाइक़ बेटा अपने बाप के मरने की दुआएं मांगने लगा ताकि बाप की मौत की सूरत में इसे तर्के (या'नी विरसे) में उस की दौलत हाथ आ जाए।

औलाद के त़लब गारों की ख़िदमत में नेकी की दा'वत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो लोग बे औलादी का रोना रोते हैं ! उन के लिये इस वाक़िअे में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है, **अल्लाह** पाक से सिर्फ़ "औलाद" का नहीं आ़फ़िय्यत वाली औलाद का सुवाल करना चाहिये वरना कहीं ऐसा न हो कि औलाद तो हो मगर सख़्त बीमार हो या मा'ज़ूर हो या ऑपरेशन से आए या आते ही अपनी अम्मी की मौत का सबब बने जैसा कि बिल ख़ुसूस पहली ज़चगी में कई माएं फ़ौत हो जाती हैं वग़ैरा। कभी ऐसा भी होता है कि बच्चा बड़ा हो कर बे नमाज़ी बन जाता है, मां बाप को सताता है, बुरी सोह़बत की वज्ह से मुनश्शिय्यात का आ़दी हो

जाता है या चोर, डाकू बन कर मुआ़शरे में उभरता है, या बद अ़क़ीदा लोगों की सोह़बत के बाइ़स बद मज़हब हो जाता है, ह़त्ता कि कभी कभी مَعَاذَاللہ गुस्ताख़े रसूल बन कर या सरीह़ कुफ़्रिय्यात बक कर या इस्लाम से मुन्ह़रिफ़ (या'नी बाग़ी) हो कर मुरतद हो जाता है। बहर ह़ाल किसी का दुन्या में "आना" दुन्या व आख़िरत के बहुत बहुत और बहुत ही सारे इम्तिह़ानात में मुब्तला होना है। इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" सफ़ह़ा 5 ता 6 पर दिया हुवा मज़्मून निहायत इ़ब्रत ख़ेज़ है, मअ़ तस्र्रुफ़ अ़र्ज़ है : ह़दीसे मुबारक में कस्रते उम्मत की तरग़ीब दिलाई गई है और हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब रोज़े क़ियामत इस उम्मत के कसीर होने पर ख़ुश होंगे और दीगर उम्मतों पर फ़ख़्र करेंगे लिहाज़ा औलाद के ह़ुसूल की ख़्वाहिश में दुन्या व आख़िरत की भलाई पाने के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें करनी चाहिएं। आज दुन्या में जो बे औलाद दिल जलाता और बच्चा पाने के लिये ख़ूब जतन करता है, वोह अच्छी त़रह़ ग़ौर कर ले कि अगर इस का मत़्महे़ नज़र (या'नी मक़्सदे अस्ली) औलाद से फ़क़त़ घर की ज़ीनत और दुन्या की राह़त है, ह़ुसूले औलाद से मक़्सूद आख़िरत की मन्फ़अ़त की कोई अच्छी निय्यत नहीं, तो ऐसा बे औलाद आदमी ना दानिस्ता त़ौर पर (या'नी अन्जान पन में) गोया "किसी" के दुन्या में पैदा होने और फिर बहुत बड़े इम्तिह़ान में मुब्तला होने की आरज़ू कर रहा है! मेरी येह बात शायद वोही शख़्स समझ सकता है जो ख़ुद "बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़" में मुब्तला हो। एक ख़ाइफ़ (या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले) बुज़ुर्ग ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़रमान का

ख़ुलासा है : मुझे बड़े से बड़े नेक बन्दे पर भी रश्क नहीं आता जो कि क़ियामत की हौलनाकियों का मुशाहदा करे (या'नी देखे) गा, मुझे सिर्फ़ उस पर रश्क आता है जो "कुछ भी" न हो। (या'नी पैदा ही न हो)

(حلیۃ الاولیاء، 8/93، رقم:11470 ملخصاً)

मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा हज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ग़लबए ख़ौफ़ के वक़्त फ़रमाया : काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता ! (طبقات کبریٰ لابن سعد، 3/274) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

काश कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
आह ! कस्रते इस्यां हाए ख़ौफ़ दोज़ख़ का काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

(वसाइले बख़्शिश, स. 256, 258)

एक आ़लिम बाप का इ़ब्रतनाक अन्जाम

मां बाप के ह़क़ में औलाद गो कभी ने'मत भी साबित होती है मगर कभी सह़ीह़ इस्लामी तरबियत पर वालिदैन के तवज्जोह न देने के बाइ़स बहुत बड़ी ज़ह़मत भी बन जाती है, इस बात को ह़िल्यतुल औलिया में वारिद शुदा इस वाक़िअ़े से समझने की कोशिश कीजिये चुनान्चे ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है कि बनी इस्राईल में एक आ़लिम साह़िब घर में इज्तिमाअ़ कर के उस में बयान फ़रमाया करते थे, एक दिन उन के जवान लड़के ने एक ख़ूब सूरत लड़की की त़रफ़ आंख से इशारा किया, जो कि उन आ़लिम साह़िब ने देख लिया और कहा : "ऐ बेटे सब्र कर।" येह कहते ही आ़लिम साह़िब अपने मन्च से मुंह के बल

गिर पड़े यहां तक कि उन की हड्डियों के बा'ज़ जोड़ टूट गए, उन की बीवी का ह़म्ल साक़ित़ हो गया और उन के लड़के जंग में मारे गए। **अल्लाह** पाक ने उस वक़्त के नबी عَلَيْهِ السَّلَام को वह़ी फ़रमाई कि फ़ुलां आ़लिम को ख़बर कर दो कि मैं उस की नस्ल से कभी सिद्दीक़ पैदा नहीं करूंगा, क्या मेरे लिये सिर्फ़ इतना ही नाराज़ होना था कि वोह बेटे को कह दे : "ऐ बेटे सब्र कर।" (حلیۃ الاولیاء، 2/422، رقم:2823) मत़लब येह कि अपने बेटे पर सख़्ती क्यूं नहीं की और उसे उस बुरी ह़रकत से अच्छी त़रह़ बाज़ क्यूं न रखा ? इस रिवायत में "सिद्दीक़" का ज़िक्र है, औलियाए किराम की सब से अफ़्ज़ल क़िस्म सिद्दीक़ कहलाती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه हमारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सिद्दीक़ थे।

पेन्सिल की चोरी से फांसी के फन्दे तक

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलाद की ऐसी तरबियत करनी चाहिये कि वोह बचपन ही से अच्छाइयों से प्यार करें और बुराइयों से बेज़ार रहें, अगर ऐसा न किया गया तो हो सकता है कि बच्चा बिगड़ जाए और बड़ा हो कर कुछ का कुछ कर डाले जैसा कि कहा जाता है कि एक ख़त़रनाक डाकू गरिफ़्तार कर लिया गया, मुक़द्दमा चला, उस पर डकेतियों और क़त्लो ग़ारत गरियों की मुख़्तलिफ़ वारिदातें साबित हो गईं जिन के सबब उसे फांसी की सज़ा सुनाई गई। जब फांसी का वक़्त क़रीब आया तो उस से उस की आख़िरी आरज़ू पूछी गई, उस ने अपनी मां से मुलाक़ात की ख़्वाहिश ज़ाहिर की, चुनान्चे उस की मां को बुला लिया गया, जूं ही उस ने अपनी मां को देखा, एक दम उस पर ह़म्ला कर दिया और नोचा नाची और मारा मारी शुरूअ़ कर दी, ड्यूटी पर मौजूद अ़मले ने जूं तूं ज़ख़्मी मां को बे रह़म बेटे के चुंगल से छुड़ाया। जब उस डाकू से इस सफ़्फ़ाकाना

ह़रकत का सबब पूछा गया तो बोला : मुझे फांसी के फन्दे तक इसी मां ने पहुंचाया है, दर अस्ल क़िस्सा यूं है कि मैं ने बचपन के ला शुऊ़री के दौर में स्कूल के अन्दर एक त़ालिबे इल्म की पेन्सिल चुरा ली और घर ला कर अपनी इस मां को दिखाई, अब चाहिये तो येह था कि वोह मुझे इस ग़लत़ काम से नफ़रत दिलाती मगर येह सिर्फ़ मुस्करा कर चुप हो रही, उस वक़्त मुझ में अ़क़्ल ही कितनी थी ! मैं समझा कि मैं ने कोई बहुत ही अच्छा कारनामा अन्जाम दिया है ! लिहाज़ा मेरा ह़ौसला बढ़ा और मैं मज़ीद पेन्सिलें और कॉपियां चुराने लगा, जब बड़ा हुवा तो चोरी की आ़दत काफ़ी पक्की हो चुकी थी और दिल ख़ूब खुल गया था लिहाज़ा मैं ने डकेतियां शुरूअ़ कर दीं, इसी लूटमार के दौरान मुझ से बा'ज़ क़त्ल की वारिदातें भी सरज़द हो गईं और मैं बहुत ''ख़त़रनाक डाकू'' बन गया आख़िर पोलीस के हाथों गरिफ़्तार हो कर आज अपनी इसी ना लाइक़ मां की ग़लत़ तरबियत की बदौलत चन्द ही लम्ह़ों के बा'द अपने गले में फांसी का फन्दा पहनने वाला हूं।

आख़िरत की सज़ा के मुक़ाबले में दुन्या की सज़ा कुछ भी नहीं !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बचपन की ग़लत़ तरबियत कैसा रंग लाई ! हो सकता है कि कोई सोचे कि हम अपने बच्चे को चोर चकार थोड़े ही बना रहे हैं ! ठीक है सब मां बाप ''मा'रूफ़ चोरी'' या'नी बा क़ाइ़दा दूसरों का माल चुराने की ता'लीम नहीं दिया करते लेकिन सिर्फ़ चोरी ही को तो बुराई नहीं कहते, और भी तो बहुत सारी बुराइयां हैं जो कई मां बाप आज कल अपनी औलाद को सिखाते हैं मसलन झूट बोल कर, धोका दे कर, कम नाप तोल कर माल बेचना वग़ैरा। क्या सूदी लेन

देन, नाक़िस माल को उ़म्दा ज़ाहिर कर के बेचने का गुर सिखाना या बेटे को दाढ़ी बढ़ाने और बेटी को शरई पर्दा करने वग़ैरा से रोकना गुनाह नहीं ? क्या इस त़रह़ करने वाले मुआ़शरे के "मुहज़्ज़ब चोर और सफ़ेद पोश डाकू" नहीं कहलाए जा सकते ? येह दुन्या में मुअ़ज़्ज़ज़ नज़र आने वाले क्या आख़िरत में भी इ़ज़्ज़त मिलने की उम्मीदें बांधे हुए हैं ! ख़ुदा की क़सम ! उस डाकू को होने वाली फांसी की दुन्यवी तक्लीफ़ और उस मां को पहुंचने वाली लम्ह़े भर की ईज़ा के मुक़ाबले में औलाद को गुनाहों की तरबियत देने वालों को मिलने वाले अ़ज़ाब का करोड़वां ह़िस्सा करोड़हा करोड़ गुना से भी शदीद व अशद और सख़्त तर होगा । اَلْاَمَان وَالْحَفِيظ

बाप को जलाने के लिये लक्ड़ियां ले आऊं

हमारे मौजूदा मुआ़शरे का एक अ़जीबो ग़रीब दिल ख़राश वाक़िआ़ सुनिये और ह़ैरत से सर धुनिये कि वालिदैन की त़रफ़ से सुन्नतों भरी तरबियत न मिलने की सूरत में औलाद कैसे कैसे अनोखे कारनामे अन्जाम देती है ! चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि 2001 ई. में हमारे यहां एक बहुत बड़े सेठ का इन्तिक़ाल हो गया । लोग उस के आ़लीशान बंगले में जम्अ़ थे कि मर्ह़ूम का 19 सालाह बेटा जो कि एक मॉडर्न स्कूल में पढ़ता था, कहीं जाने के लिये एक दम उ़ज्लत (या'नी जल्दी) में उठा, किसी ने उ़ज्लत (या'नी जल्दी) का सबब दरयाफ़्त किया तो कहने लगा : "मेरे वालिद साह़िब मेरे साथ बहुत मह़ब्बत करते थे, मैं ने सोचा कि आख़िरी वक़्त अपने हाथों से इन की कुछ ख़िदमत कर लूं, चुनान्चे इन की मय्यित को जलाने के लिये मैं ख़ुद लक्ड़ियां ले कर आऊंगा ।" येह सुन कर लोगों की ह़ैरत की इन्तिहा न रही कि इस का बाप तो मुसल्मान

था, फिर इस को जलाने के लिये लकिड़यां क्यूं लेने जा रहा है ! ग़ौर किया तो अन्दाज़ा हुवा कि इस नादान ने ग़ैर मुस्लिमों की फ़िल्मों में लाशें जलाने के मनाज़िर देख लिये होंगे तो इस के ज़ेह्न में येह बात बैठ गई होगी कि जो भी मर जाए उस को जलाना होता है इस फ़िल्में देखने के शौक़ीन को येह पता ही न होगा कि मुसल्मानों को जलाया नहीं दफ़्नाया जाता है। बहर ह़ाल उस के मर्हूम वालिद की तदफ़ीन कर दी गई। जब फ़िल्मों के इस ख़ौफ़नाक मन्फ़ी असर (SIDE EFFECT) का येह वाक़िआ़ उस अ़लाक़े के लोगों को मा'लूम हुवा तो उन्हें बड़ी इ़ब्रत हुई, कई नौ जवानों ने जोश में आ कर "केबल" काट डाले कुछ अ़र्से तक येही सूरते ह़ाल रही मगर रफ़्ता रफ़्ता नफ़्सो शैत़ान ग़ालिब आए और केबल फिर से जोड़ लिये गए !

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर नफ़्सो शैतां सय्यिदा कब तक दबाते जाएंगे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 157)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه के इस शे'र के मा'ना हैं **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!** हम कमज़ोर ग़ुलामों की गुनाहों से ह़िफ़ाज़त फ़रमाइये, ऐ आक़ा ! हम गुनाहों के मरज़ से आख़िर कब शिफ़ा पाएंगे ! आख़िर येह नफ़्सो शैत़ान हमें कब तक गुनाहों में फंसाए रहेंगे ! (नफ़्सो शैत़ान के शर से बचने का एक बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि किसी पीरे कामिल का मुरीद हो जाए कि जब उस के जामेअ़ शराइत़ पीर पर नफ़्सो शैत़ान के वार नहीं चल पाएंगे तो उस की बरकत से उस के मुरीदीन की भी ह़िफ़ाज़त की सूरत बनी रहेगी। एक सराईकी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है)

पीर दे हथ विच हथ कूं डे कर   नफ़्स दी बांहा मरोड़ तां तूं हिक थीवें

(या'नी अपना हाथ किसी पीरे कामिल के हाथों में दे कर नफ़्स का बाज़ू मरोड़ दे ताकि तुझे मक़ामे फ़नाइय्यत ह़ासिल हो)

ईसाले सवाब का इन्तिज़ार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस अनोखे वाक़िए में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। अगर्चे आप आज ज़िन्दा हैं मगर कल यक़ीनन मरना पड़ेगा, अगर आप ने अपने बेटे को सिर्फ़ और सिर्फ़ दुन्या पढ़ाई, दौलत कमानी ही सिखाई, ख़ूब मूसीक़ी सुनाई, एक से एक फ़िल्म दिखाई, दीनी ता'लीम न दिलाई न सिखाई, मस्जिद की राह न दिखलाई, उस के दिल में महब्बते रसूल की शम्अ़ न जलाई, मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत की निशानी प्यारी प्यारी मुबारक दाढ़ी उस के चेहरे पर न सजवाई बल्कि ठीक ठाक फ़ैशन करवाया तो याद रखिये ! न वोह आप का जनाज़ा पढ़ सकेगा और न ही उसे आप के लिये ईसाले सवाब करना आएगा ! ह़ालां कि मरने के बा'द ईसाले सवाब की आप को बहुत ज़ियादा ह़ाजत होगी । सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : मुर्दे का ह़ाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ उस में है) से बेहतर होती है । **अल्लाह** पाक क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिये "दुआ़ए मग़्फ़िरत करना" है । (شعب الایمان، 6/203، حدیث:7905)

हर भले की भलाई का सदक़ा इस बुरे को भी कर भला या रब

(ज़ौक़े ना'त, स. 60)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला